नमाज़

(मअ़) छः नम्बर

मुकम्मल नमाज़

मअ़

(छः नम्बर)

फ़िहरिस्ते उन्वान

फ़िहरिस्ते उन्वान

फ़िहरिस्ते उन्वान

छः नम्बर

(१) ईमान

नह्मदुहू वनुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

अल्लाह तआला का हम पर बहुत बड़ा एहसान व करम है कि उसने हम सब को इस्लाम जैसी बड़ी दौलत अता फ़रमाई। अल्लाह के यहाँ हर एक मुसलमान और ईमान वाले की बहुत ज़्यादा क़ीमत और इज़्ज़त है कि अगर एक ईमान वाला भी इस दुनिया मे बाक़ी रहेगा तो अल्लाह तआला इस दुनिया के निज़ाम को चलाते रहेंगे। और सब से कम दर्जे के मुसलमान और ईमान वाले को भी जो ज़र्रा बराबर भी इस दुनिया से ईमान को बचाकर ले जायेगा अल्लाह तआला इस दुनिया से दस गुनी बड़ी जन्नत देंगे। इसलिए मुसलमान होना और ईमान का रखना बहुत ही क़ीमती चीज़ है। और ईमान यह है कि कलिमा *"ला इलाह इल लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"*

पढ़ा जाए और यह यकीन किया जाये कि जो कुछ भी होता है वो अल्लाह तआ़ला करते हैं, और अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई कुछ नहीं कर सकता। और हज़रत मुहम्मद (स०) अल्लाह के रसूल हैं। आपने जो बातें बताई हैं वह बिल्कुल सच्ची हैं। और आप ही के तरीक़ों पर चलने में कामियाबी है।

(२) नमाज़

कलमा–ए–तैयबा का इक़रार कर लेने के बाद बन्दे के ज़िम्मे खुदा के अहकाम का पूरा करना फर्ज़ हो जाता है। उन अहकाम में पहला हुक्म "नमाज़" है जिसके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने फ़रमाया *"सल्लू कमा रएतुमूनी उसल्ली"* नमाज़ हर बालिग़ मर्द व औरत, रात दिन में पाँच वक्त फर्ज़ है। जो बन्दे कलिमा तैयबा के इक़रार के बाद नमाज़ की पाबन्दी करते हैं वह इस इक़रार को अपने अमल से पूरा करते हैं जो कलिमा में किया था।

और जो लोग नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते चूंकि वह अपने गुलामी के इक़रार को अपने अमल से झूठा कर दिखाते हैं इसलिए उनके मुतअल्लिक़ हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिसने नमाज़ छोड़ दी उसने कुफ़्र का काम किया और यह भी फ़रमाया है कि नमाज़ छोड़ने वाला क़ियामत के दिन क़ारून और फ़िरऔन और हामान और उब्बई बिन ख़लफ़ के साथ होगा। कलिमा के बाद नमाज़ सब आमाल में अफ़ज़ल है। और हदीस में आया है कि कियामत के दिन सब से पहले नमाज़ ही का हिसाब लिया जायेगा। अगर नमाज़ ठीक निकली तो कामियाब और बामुराद होगा। वरना आख़िरत की नेमतों से महरूम होगा और बड़े टूटे और घाटे में होगा। इसलिए नमाज़ को हमेशा ख़ूब पाबन्दी से ठीक वक़्त पर अच्छी तरह वज़ू करके और दिल लगाकर पढ़ना चाहिये।

(३) इल्म

अल्लाह तआ़ला को वही इल्म पसन्द है जो बन्दे को खुदा तक पहुँचाये और खुदा के अहकाम पर चलाये। दीन का इतना इल्म हासिल कर ले जिस में अपना दीन दुरूस्त हो सके। हर मुसलमान पर फर्ज़ है। जब बन्दा ने अल्लाह की गुलामी का इक़रार कर लिया और दिल में अल्लाह के हुक्म पर चलने का पक्का इरादा कर लिया तो अब बन्दा के ज़िम्मे ज़रूरी है कि खुदा के हुक्मों को मालूम करे और इबादत के तरीके दरयाफ़्त कर ले। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, आपस के मामलात, रहन सहन, खाने पीने, उठने बैठने, सोने जागने और उनके अलावा दूसरी चीज़ों के अहकाम मालूम कर ले और कम से कम उन अहकाम को तो ज़रूर ही मालूम करे जिन पर अमल न करने से बड़े बड़े गुनाह हो जाते हैं। और मालूम करके अमल भी करे क्योंकि हदीस शरीफ़ में आया है कि बिला शुबहः कियामत के

दिन सब से ज़्यादा सख़्त अज़ाब वालों में दीन का वह जानने वाला भी होगा जिसने अपने इल्म से फ़ायदा न उठाया।

(४) ज़िक्र

ज़िक्र का आला दर्जा यह है कि हर वक़्त अल्लाह की तरफ़ ध्यान रहे और उसकी याद में दिल लगा रहे। ज़्यादा मश्क़ करने में और ज़ुबान के अल्लाह की याद में लगा रहने से यह दर्जा हासिल हो जाता है। जिन बन्दों ने ज़िक्र का फ़ायदा और उसकी बरकतें समझ ली हैं वह अपनी उम्र का ज़रासा भी हिस्सा खुदा की याद से ख़ाली नहीं जाने देते हैं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को नसीहत फ़रमाई थी कि हर वक़्त तेरी ज़ुबान अल्लाह की याद में तर रहे। और आप ने यह भी फ़रमाया है कि जब कुछ लोग किसी जगह बैठें और वहाँ से अल्लाह का ज़िक्र किये बग़ैर उठ गये तो यह समझ लो कि गोया वह मुर्दार गधे, की लाश को खाते उठे और

यह मज्लिस उनके लिए आख़िरत में हसरत का सबब बनेगी।

इकरामे मुस्लिम:– रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि वह शख़्स हम में से नहीं है जो हमारे बुज़ुर्गों की ताज़ीम न करे और हमारे छोटों पर शफ़्क़त न करे और हमारे इल्म दीन रखने वालों की क़दर न पहचाने और हदीस में यह भी आया है कि तीन शख़्सों की तौहीन मुनाफ़िक़ ही करेगा। अव्वल बूढ़ा मुसलमान, दूसरा आलिम, तीसरा मुसलामनों का मुन्सिफ़ बादशाह। मोमिन की शान यह है कि हर मख़्लूक़ का ध्यान रखे और तवाज़ुअ़ के साथ पेश आये। जो अपने लिए पसन्द करे वही सब के लिए पसन्द करे। न किसी से बुग़ज रखे और न हसद को दिल में जगह दे। न अपने को बड़ा समझे। सब के साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आये। मुसलमान को ख़ुद सलाम करे। काई सताये तो माफ़ करदे।

इख़्लास नियत:— जो भी नेक काम करना है वह सिर्फ अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए करना है। अगर किसी दिखावे के लिए कोई काम किया जायेगा तो सवाब नहीं मिलेगा और अमल बेकार होगा।

तफ़रीगे वक़्त:— तफ़रीग़ वक़्त का लफ़्ज़ी तर्जुमा "वक़्त का ख़ाली करना" है इसका मतलब यह है कि दुनिया के मशग़लों और फ़ना हो जाने वाली ज़िन्दगी के धंधों को छोड़ कर ज़िन्दगी का बहुत बड़ा हिस्सा महज़ रज़ाये इलाही के लिए ख़र्च किया जाये और अल्लाह के अहकाम को दूसरों तक पहुँचाने के लिए घर बार छोड़ कर खुद अपना ईमान क़वी करें। ज़िन्दगी के इस हिस्से में पिछले पाँच नम्बरों की हक़ीक़तों और तक़ाज़ों को समझने और उन पर अमल करने की मश्क़ की जाये। क्योंकि तजुर्बे से यह बात साबित है कि घर रहते हुये इस्लामी अहकाम का सीखना और सिखाना और आख़िरत की फ़िक्र और ख़ुदा

का ख़ौफ़ दिल में पैदा हो जाना और सही इस्लामी ज़िन्दगी हासिल हो जाना ख़ुसूसन हमारे इस ज़माने में बहुत दुशवार है। इसिलए ज़रूरत है कि दुनिया के मशग़लों से आज़ाद होकर और अल्लाह से तअ़ल्लुक़ को तोड़ने वाले बंधनों को काट कर घर बार छोड़ा जाये और अल्लाह के उन बन्दों के साथ मिलजुल कर जो ख़ुदा की रज़ा हासिल करने के लिए वतन छोड़ चुकें हों, जमाअ़ती शक्ल में दीनी अहकाम सीखने और सिखाने की मश्क़ की जाये और सीखने सिखाने के साथ अल्लाह के बंदों को भी अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाये। जो दुनिया की फ़ानी ज़िन्दगी पर जान खपा रहे हैं और आख़िरत की ज़िन्दगी को भूल चुके हैं।

फ़र्ज़ किसको कहते हैं?

फ़र्ज़ वह इबादत है जो यक़ीनी दलील से साबित हो। यानी उसके सुबूत में कोई शुबह: न हो। फ़र्ज़ का इन्कार करने वाला काफ़िर

हो जाता है। और बग़ैर उज़्र के छोड़ने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ है।

फ़र्ज़ की दो किस्में हैं : (१) फ़र्ज़े ऐन (२) फ़र्ज़े किफ़ाया

फ़र्ज़े ऐन:— उस फ़र्ज़ को कहते है जिसका अदा करना हर शख़्स पर ज़रूरी हो और बिला उज़्र छोड़ने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ है। और वह गुनाहगार होगा।

फ़र्ज़े किफ़ाया:— उस फ़र्ज़ को कहते है जो एक दो आदमियों के अदा कर लेने से सब के ज़िम्मे से उतर जाये। और अगर कोई भी अदा न करे तो सब के सब गुनाहगार होंगे।

वाजिब किसको कहते हैं?

वाजिब वह इबादत है जो ज़िन्नी दलील से साबित हो। वाजिब का इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं होता। हाँ बिला उज़्र छोड़ने वाला

फ़ासिक़ और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होगा।

सुन्नत किसको कहते हैं?

सुन्नत उस क़ाम को कहते है जिसको रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या सहाबा–ए–किराम ने किया हो या करने का हुक्म फ़रमाया हो।

सुन्नत की दो किसमें हैं : (१) सुन्नते मुअक्कदा (२) सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा

सुन्नते मुअक्कदा:— उस काम को कहते है जिसे रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा किया हो या फ़रमाया हो और हमेशा किया गया हो। यानी बग़ैर उज़्र के कभी न छोड़ा हो। ऐसी सुन्नतों को बग़ैर उज़्र छोड़ देना गुनाह है और छोड़ने की आदत बना लेना सख़्त गुनाह है।

सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा:— उस काम को कहते जिसे हज़रत रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अकसर किया हो लेकिन कभी कभी बग़ैर उज़्र के छोड़ भी दिया हो। उन सुन्नतों के करने से मुस्तहब से ज़्यादा सवाब है और छोड़ने से गुनाह नहीं।

मुस्तहब या नफ़्ल:— उन कामों को कहते हैं जिनको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया हो। लेकिन हमेशा और अक्सर नहीं बल्कि कभी—कभी किया हो या उसकी फ़ज़ीलत शरीअत में साबित हो उनके करने से सवाब है और न करने से अज़ाब नहीं।

आदाब:— वह काम है जिसके करने में सवाब है और उसके छोड़ने में न कोई बुराई है न अज़ाब।

हराम किसको कहते हैं?

हराम वह काम है जिसकी मुमानियत यक़ीनी दलील से साबित हो और उसका करने वाला फ़ासिक़ और अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है और इन्कार करने वाला काफ़िर होता है।

मकरूहे तहरीमी:— वह काम है जिसकी मुमानियत ज़िन्नी दलील से साबित हो उसका इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं मगर गुनाह गार है।

मकरूहे तनज़ीही:— वह काम है जिसको छोड़ने से सवाब है। करने मे अज़ाब तो नहीं मगर एक क़िस्म की बुराई है।

सहाबी किसको कहते हैं?

वह शख़्स जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुसलमान होने की हालत में मुलाक़ात की हो और

इस्लाम ही पर इन्तक़ाल हुआ हो।
एक सहाबी के नाम के आगे रज़ियल्लाह अन्हु लगाना चाहिये और दो सहाबी हों तो उनके नाम के आगे रज़ियल्लाह तआ़ला अन्हुमा लगाना चाहिये। और उसकी जमा सहाबा आती है। उनके नाम के आगे रज़ि यल्लाहु तआ़ला अन्हुम लगाना चाहिये। और एक औरत है तो उनको सहाबिया कहते हैं उनके नाम के आगे रज़ि यल्लाह तआ़ला अन्हा लगाना चाहिये और अगर दो है या दो से ज़्यादा हैं तो उनको सहाबियात कहते हैं और उनके नाम के आगे रज़ि यल्लाह तआ़ला अन्हुन्ना लगाना चाहिये।

ताबई किसको कहते हैं?

वह शख़्स जिसने किसी सहाबी से मुसलमान होने की हालत में मुलाक़ात की हो और इस्लाम ही पर उसका इन्तिक़ाल हुआ हो।

मुनाफ़िक़ किसको कहते हैं?

वह शख़्स जो ज़ुबान से अपने आप को मुसलमान बताता हो और दिल से काफ़िर हो।

फ़ासिक़ किसके कहते हैं? गुनाहगार को बुरे काम करने वाले को फ़ासिक कहते हैं।

ईमान किसको कहते हैं?

उन बातों को दिल से मानना जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की तरफ़ से बताई हैं और उनका ज़ुबान से इक़रार भी करना।

हदीस किसको कहते हैं?

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों को हदीस कहते हैं। या इस तरह कहना कि वह क़ौल और फ़ेल और तक़रीर और हाल जिसकी निस्बत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ हो नीज़ सहाबा

किराम के क़ौल व फ़ेल व तक़रीर और ताबि के क़ौल व फ़ेल को भी हदीस कहते हैं। तक़रीर से मुराद किसी वाक़ेअ़ के सामने या इल्म में आने पर ख़ामोशं रहना। हाल से मुराद जिस्मानी और अख़्लाक़ी अहवाल है।

छः कलिमे

पहला कलिमा— *ला इलाह इल लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।*

दूसरा कलिमा— *अशहदु अल्ला इला ह इलल्लाहु व अशहदु अन्न न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।*

तीसरा कलिमा— *सुब्हानल्लाहि वल हम्दुलिल्लाहि वला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम।*

चौथा कलिमा— *ला इला—ह इललल्लाहु वहदहू ला शरी क लहू लहुल मुल्कु व*

लहल हम्दु युह्यी वयुमीतु व हु—व हय्युला—यमूतु अ—ब—दन अ—ब—दा जुलजलालि वल—इकराम बियदिहिल ख़ैर व हु—व अला कुल्लि शैइ इन कुदीर।

पाँचवा कलिमा— अंस्तग़ फ़िरूल्ला—ह रब्बी मिन कुल्लि ज़न्बिन अज़ नब तुहू अ—म—दन अव—ख़—त—अन सिर्रन अव अलानि—य—तैव व अतूबु इलैहि मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी ला अअ्‌ लमु इन्—क अंन—त अल्लामुल ग़ुयूबि व सत्तारुल उयूबि व ग़फ्फ़ा रुज्जुननूबि वला हौ—ल वला कुव्व—त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम।

छटा कलिमा— अल्लाहुम्म—म इन्नी अउज़ुबि—क मिन अन उश्रि—क बि—क शै अैं व—अन अअ्‌ लमु बिही व अस तग़फ़िरु—क लिमा ला अअ्‌ लमु बिही तुब्तु अन्हु व—त—बर्रअतु मिनल कुफ़्रि वश्शिर—कि वल—किज़्बि वल—ग़ीब्रति वल बिदअति वन्नमी मति वल फ़वाहिशि वलबुह्तानि वल—मआसी कुल्लिहा व अस

लम्तु व–अकूलु ला इला–ह इललल्लाहु मुहमदुर्रसूलुल्लाह।

दर्ज ज़ैल चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है

(१) अल्ला तआ़ला पर (२) उसके फ़रिशतो पर (३) अल्लाह तआ़ला कि नाज़िल कर्दा किताबो पर (४) उसके रसूलो पर (५) तक़दीर के ख़ैर व शर पर (६) बअ़्स बादल मौत।

फ़राइज़े वुज़ू चार हैं

(१) एक मर्तबा सारे चेहरे को धोना (२) एक एक बार दोनों हाथ कुहनियो समेत धोना (३) एक बार ¼ सिर मसह करना (४) एक बान दोनों पाँव टख़नों समेत धोना।

सुनने वुज़ू– (१) वुज़ू की निय्यत करना (२) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढना (३) हाथों और पैरो को तीन–तीन बार धोना

(४) मिस्वाक करना या दांतों पर उंगली मलना (५) कुल्ली करना (६) तीन बार नाक में पानी डालना और ख़ूब साफ़ करना (७) दाढ़ी अगर छोटी है तो अंदर तक भिगोना और अगर घनी है तो ख़िलाल करना (८) हाथों और पैरों को धोते वक़्त उंगलियों का ख़िलाल करना (९) हर हिस्से को तीन बार धोना (१०) तरतीब से वुज़ू करना (१२) लगातार धोना।

मुस्तहिब्बाते वुज़ू— (१) सीधी तरफ़ से शुरू करना (२) गर्दन का मसह करना (३) वुज़ू का काम ख़ुद करना (४) क़िबले की तरफ मुंह करके बैठना (५) पाक और ऊँची जगह पर बैठ कर वुज़ू करना।

आदाबे वुज़ू— (१) कनकी उंगली भिगोकर कानों के सुराख़ों में दाख़िल करना (२) नमाज़ के वक़्त से पहले ही वुज़ू कर लेना (३) अअ्ज़ा को धोते वक़्त हाथ से मलना (४) ढीली अंगूठी को हिलाना (५) दुनिया की बातें न करना (६) ज़ोर से पानी मुँह पर

न मारना (७) ज़्यादा पानी न बहाना (८) हर हिस्से को धोने के लिए बिस्मिल्ला पढ़ना (१०) वुज़ू के बाद कलिमा शहादत (अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह व अश–हदु अन्न न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह) पढ़ना (११) वुज़ू का बचा हुआ पानी थोड़ा सा खड़े होकर पीना (१२) वुज़ू के बाद दो रक्अत तहियतुल वुज़ू पढ़ना।

मकरूहाते वुज़ू— (१) नापाक जगह पर वुज़ू करना (२) सीधे हाथ से नाक साफ़ करना (३) वुज़ू में दुनिया की बातें करना (४) वुज़ू की सुन्नतों को छोड़ना (५) पानी ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करना (६) बिला ज़रूरत पानी कम इस्तेमाल करना (७) पानी चेहरे पर मारना (८) तीन बार पानी लेकर तीन बार मसह करना।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीजें— (१) पेशाब पाख़ाना करना या उन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना (२) रीह यानी हवा का निकलना (३) बदन के किसी जगह से

ख़ून या पीप का निकल कर बह जाना (४) मुंह भर के क़य करना (५) लेट कर या सहारा लगाकर सोना (६) बीमारी या और किसी वजह से बेहोश हो जाना (७) मजनू यानी दीवाना हो जाना (८) नमाज़ में खिल खिलाकर हँसना।

फज़ाईले ग़ुस्ल— (१) कुल्ली करना (२) नाक में पानी डालना (३) तमाम बदन पर पानी बहाना।

सुनने ग़ुस्ल— (१) दोनों हाथ गट्टों तक धोना (२) इस्तिंजा करना और जिस जगह बदन पर नजासत लगी हो उसे धोना (३) नापाकी दूर करने की नीयत करना (४) पहले वुज़ू कर लेना (५) तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना।

मकरूहाते ग़ुस्ल— (१) ज़रूरत से ज़्यदा पानी बाहाना (२) नंगा होने की हालत में बात करना (३) क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना (४) सुन्नतो के ख़िलाफ़ ग़ुस्ल करना।

फराईज़े तयम्मुम

(१) पाकी हासिल करने की नीयत करना (२) दोनों हाथ पाक मिट्टी पर मार कर मुंह पर फेरना (३) दोबारा दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों पर कुहनियों समेत फेरना।

सुनने तयम्मुम

(१) शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम पढ़ना (२) तरतीब से करना (३) पै दर पै करना (४) दोनों हाथ मिट्टी पर रख कर आगे की तरफ करना (५) फिर पीछे को करना (६) फिर हाथों को झाड़ना (७) हाथ मिट्टी पर मारते वक़्त उंगलियों को खुली रखना।

वह चीज़ें जिन पर तयम्मुम किया जा सकता है

(१) पाक मिट्टी पर (२) रेत पर (३) पत्थर पर (४) चूने पर (५) मिट्टी के कच्चे और

पक्के बर्तनों पर जिन पर रौग़न न किया गया हो (६) कच्ची या पक्की ईंट पर (७) मिट्टी की ईंटों, पत्थरों या चूने की दीवार पर (८) गेरू या मुल्तानी मिट्टी पर।

नमाज़

अज़ान

अल्लाहु अकबर॰ अल्लाहु अकबर॰

अल्लाहु अकबर॰ अल्लाहु अकबर॰

अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह॰

अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह॰

अशहदु अन्न न मुहम्दर रसूलुल्लाह॰

अशहदु अन्न न मुहम्दर रसूलुल्लाह॰

हइ—य अ़लस्सलाह॰ हइ—य अ़लस्सलाह॰

हइ—य अ़लल फ़लाह॰ हइ—य अ़लल फ़लाह॰

अल्लाहु अकबर॰ अल्लाहु अकबर॰

ला इला ह इलल्लल्लाह॰

फज्र की अज़ान में 'हइ—य अलल फ़लाह०' के बाद 'अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम० अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम०' का इज़ाफ़ा करें फिर अज़ान के बाकी जुमले अदा करें और नमाज़ के लिए जब खड़े हों तो तकबीरे इक़ामत में अज़ान के अलफ़ाज़ में 'हइ—य अलल फ़लाह०' के बाद 'क़द क़ा मतिस्सलाह० क़द क़ा मतिस्सलाह०' का इज़ाफ़ा करके अज़ान के बाक़ी जुमले अदा करें।

अज़ान के बाद की दुआ

अल्लाहुम्म म रब्ब ब हाज़िहिद दअ़वतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्म द निल वसी ल त वल फ़ज़ील त वब असहु मक़ामम महमू—द निल्लज़ी वअत्तहू इन्न क़ ला तुख़्लिफुल मीआ़द०

सना— सुब्हा न कल्ला हुम्म म व बिहम्दि क व तबा र कस्मु क व तआ़ला जद्दु क वला इला ह ग़ैरुक०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

سورۃ الفاتحہ : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لا
اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لا مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ط اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ط اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ لا صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ لا
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ع (اٰمِيْن)

तअ़व्वुज़— अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शै तानिर्रजीम०

तस्मिया— बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

सूरतुल फ़ातिहा— अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन० अर्रहमानिर्रहीम० मालिकि यौमिद्दीन० इय्या—क नअ़बुदु व इय्या—क नस्तईन० इह्दिनस्सिरातल्मुस्तक़ीम०

सिरातल्लज़ी—न अनअम—त अलैहिम० ग़ैरिल—मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन० (आमीन)

سورۃ العصر : وَالْعَصْرِ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ لا اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْ وَعَمِلُو الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْ بِالْحَقِّ لا وَتَوَاصَوْ بِالصَّبْرِ ط

सूरतुल अस्र— वल अस्रि० इन्नल इन्सा—न लफ़ी ख़ुस्र० इल लल्लज़ी—न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व—त—वा—सौ बिल हक़्क़ि० व—त—व सउ बिस्सब्र०

سورۃ الفیل : اَلَمْ تَرَ کَیْفَ فَعَلَ رَبُّکَ بِاَصْحٰبِ الْفِیْلِ ط اَلَمْ یَجْعَلْ کَیْدَھُمْ فِیْ تَضْلِیْلٍ لا وَّاَرْسَلَ عَلَیْهِمْ طَیْرًا اَبَابِیْلَ لا تَرْمِیْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّیْلٍ ص فَجَعَلَهُمْ کَعَصْفٍ مَّاْکُوْلٍ ع

सूरतुल फील— अलम–त–र कै फ़–अ़–ल रब्बु–क बिअस्हाबि फील॰ अलम यज अ़ल कइ दहुम फ़ी तज़्लील॰ व अर–स–ल अ़लैहिम तयरन अबाबील॰ तरमीहिम बिहिजा रतिम–मिन –सिज्जील॰ फ़–ज–अ लहुम क–अ़स्फ़िम मअ्–कूल॰

سورة القريش : لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ لا اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ج فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ لا الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ لا وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ع

सूरतुल कुरैश— लिईलाफ़ि कुरयशि॰ ईलाफ़िहिम रिह लतश्शिशताइ वस्सैफ़॰ फ़ल यअ़बुदू रब–ब हाज़ल बैत॰ अल्लज़ी अत–अ–महुम मिन जूअ॰ व आ–म–न–हुम मिन ख़ौफ़॰

سورة الماعون : اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ط فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ لا وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ

الْمِسْكِيْنِ ط فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ لا الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلاَ
تِهِمْ سَاهُوْنَ لا الَّذِيْنَ هُمْ يُرَاءُوْنَ لا وَيَمْنَعُوْنَ
الْمَاعُوْنِ ع

सूरतुल माऊन— अ—र—ऐय्तल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन० फ़ज़ा लिकल्लज़ी यदुऊल यतीम० वला यहुज़्ज़ु अ़ला तआमिल मिस्कीन० फ़ वै —लुल लिल मुस़ल्लीन० अल्लज़ी—न हुम अ़न सलातिहिम साहून० अल्लज़ी न हुम युरा ऊन० व यम नऊनल माऊन०

سورۃ الکوثر : اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ط فَصَلِّ
لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ط اِنَّ شَانِئَكَ هُوَالْاَبْتَرُ ع

सूरतुल कौसर— इन्न ना आतैना कल कौस़र० फ़सल्लि लि—रब्बि—क वन्हर० इन्न—न शानि—अ—क हुवल अबतर०

سورۃ الکافرون : قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ لا لَآ اَعْبُدُ

مَاتَعْبُدُوْنَ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِىَ دِيْنِ ع

सूरतुल काफिरून— कुल या ऐयुहल काफ़िरून० ला अअ्बुदू मा—तअ्बुदून० वला अन्तुम आबिदू—न मा अअ्बुद० वला अ न आबिदुम माअबत्तुम वला अन्तुम आबिदू न मा अअ्बुद० लकुम दीनुकुम वलि—यदीन०

سورة النصر : اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ع

सूरतुन्नस्र— इज़ा जा अ नस्रुल्लाहि वल फ़तह० व—र—ऐतन्ना—स यद खुलू न फ़ी—दीनिल्लाहि अफ़्वाजा० फ़—सब्बिह बिहम्दि रब्बि—क वस्तग़ फ़िर्हु० इन्नहू का—न तव्वाबा०

سورۃ اللھب : تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ
مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ سَيَصْلٰى نَارًا
ذَاتَ لَهَبٍ صلے ج وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ج
فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ع

सूरतुल लहब— तब्बत यदा अबी ल हबिउं वतब्ब० मा अग़ना अन्हु मालुहू वमा कसब० सयस्ला नारन ज़ा—त लहब० वम—र अतुहू हम्म मा ल—तल हतब० फ़ी जीदिहा हब्लुम मिम मसद०

سورۃ الاخلاص: قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ج اَللّٰهُ الصَّمَدُ ج
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ع

सूरतुल इख़्लास— कुल हुवल्लाहु अहद० अल्लाहुस्समद० लम यलिद० व लम यूलद० व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद०

سورۃ الفلق: قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ع

सूरतुल फ़लक़— कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़० मिन शर्रि मा ख़लक़० व—मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब० वमिन शर्रिन—नफ़्फ़ासाति फ़िल उ़क़द० वमिन शर्रि हासिदिन इज़ा ह़सद०

سورة الناس : قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ع

सूरतुन्नास— कुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास० मलिकिन्नास० इलाहिन्नास० मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास० अल्लज़ी यु वसविसु फ़ी सुदूरिन्नास० मिनल जिन्नति वन्नास०

तशहहुद— अत्ताहिय्यातु लिल्लाहि वस—स— ल—वातु वत्तैयिबाति—अस्सलामु अ़लैक ऐयुहना नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब र कातुह अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहिन॰ अशहदु अल्ला इला—ह इललल्लाहु वअश हदु अन—न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह॰

दरूद शरीफ—- अल्लाहुम्म म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व—अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अ़ला इबराहीम॰ व अ़ला आलि इबराही—म इन्न क हमीदुम्मजीद॰ अल्लाहुम्म म बारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक त अ़ला इबराहीम॰ व अ़ला आलि इबराहिम इन्न क हमीदुम्मजीद॰

दरूद शरीफ के बाद की दुआ

अल्लाहुम्म—म इन्नी ज़लमतु नफ़सी जुल मन कसीरौं वला यग़ फिरूज़्ज़ुनू—ब इल्ला अन—त फ़ग़फिरली मग़ फि—र—तम मिन

इन्दिक वर हम्नी इन्न क अन्तल ग़फ़ूरुर्रहीम०

दुआ—ए—क़ुनूत

अल्ला हुम्म म इन्ना नस्तईनु क वनस्तग़—फ़िरु क व नुअ्मिनुबि क व न त वक्कलु अलै—क व नुस्नी अ़लै कल ख़ैर० व नशकुरु क वला नग़ फ़ुरु क वनख़्लउ व नतरुकु मैंयफ़ जुरुक० अल्लाहुम्म म इय्या क नअ्बुदु व ल क नुसल्ली व नस्जुदु व इ़लै क नस्आ व नह फ़िदु व नरजू रह—म—त—क व नख़्शा अ़ज़ा—ब—क इन्न न अ़ज़ा—ब—क बिल कुफ़्फ़ारि मुल्हिक़०

آیۃ الکرسی : اَللّٰہُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ج اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ج لَا تَاْ
خُذُہٗ سِنَۃٌ وَّلَا نَوْمٌ ط لَہٗ مَافِی السَّمٰوٰتِ وَمَافِی الْاَرْضِ ط
مَنْ ذَالَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَہٗٓ اِلَّا بِاِذْنِہٖ ط یَعْلَمُ مَابَیْنَ اَیْدِیْھِمْ
وَمَا خَلْفَھُمْ ج وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِہٖٓ اِلَّا

بِمَا شَآءَ ج وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ج وَلَا
يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ج وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

आयतुल कुर्सी— अल्लाहु ला इला—ह इल्लाहु वल हैयुल क़ैयूम॰ ला तअ्ख़ुज़ुहू सि—न तुंव्वला नौम॰ लहू माफ़िस्समावाति व माफ़िल अर्ज़॰ मन ज़ल्लज़ी यश फउ इन्दहू इल्ला बिइज़्नि॰ यअ्लमु मा बै—न ऐदीहिम वमा ख़लफ़हुम वला युहितु—न बि शैइम्मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ्॰ वसि—अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर्ज़॰ वला यउदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहुवल अलीय्युल अज़ीम॰

तरावीह की दुआ— सुब्हा—न ज़िमुल्कि वल म—लकूति सुब्हा—न ज़िल्इज़्ज़ति वल अज़ मति वल हयबति वल कुदरति वलकिब्रिया इ वल ज—ब रूत॰ सुब्हानल मलिकिल हैयिल्लज़ी ला यनामु वला यमूत सुब्बूहुन

कुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्रूह० अल्ला हुम्म म अजिरना मिनन्नार० या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु०

शुरूते सलात— (१) बदन का पाक होना (२) कपड़ों का पाक होना (३) जगह का पाक होना (४) सतर का छुपाना (५) नमाज़ का वक़्त होना (६) क़िबले की तरफ़ रुख़ करना (७) नीयत करना।

अर्कानि सलात— (१) तकबीर तहरिमा कहना (२) खड़ा होना (३) कुरआन मजीद पढ़ना (४) रुकु करना (५) दोनों सज्दे करना (६) नमाज़ के आख़िर में अत्तहिय्यात पढ़ने की मिक़्दार बैठना।

वाजिबाते सलात— (१) सूरे फ़ातिहा का पढ़ना यानी फ़र्ज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकअ़त के अलावा तमाम नमाज़ों की हर रकअ़त में सूरे फ़ातिहा का पढ़ना (२) सूरत का मिलाना (३) फ़र्ज़ की पहली दो रकअ़तों को क़िरअत के लिए मुतऐयन

करना (४) सूरे फातिहा को सूरत से पहले पढ़ना (५) अरकान को तरतीब से अदा करना (६) क़ौमा करना (यानि रूकुअ् से उठ कर सीधे खड़े होना) (७) जलसा करना (यानि दोनों सज्दों के दरम्यान सीधे बैठना) (८) पहला कअ्दा करना (यानि तीन और चार रकअ़त वाली नमाज़ों में दो रकअ़तों के बाद तशहहुद की मिक़्दार बैठना) (९) दोनों कअ्दों में तशहहुद पढ़ना (१०) तादील अरकान यानी रुकू, सज्दा वग़ैरा को इत्मिनान से अच्छी तरह अदा करना (११) लफ्ज़े सलाम से नमाज़ को ख़त्म करना (१२) वित्र में दुआ–ए कुनूत के लिए तकबीर कहना और दुआ–ए कुनूत पढ़ना (१३) ईदैन में ज़ायद छः तकबीरें कहना (१४) इमाम को फज्र, मग़रिब, इशा, जुमा, ईदैन तरावीह और रमज़ान के वित्रों में ज़ोर से किरअत करना और जुहर, अस्र में आहिस्ता पढ़ना।

सुनने सलात

क़याम की ग्यारह सुन्नतें— (१) तकबीर तहरीमा के वक़्त सीधा खड़ा होना यानि सर को न झुकाना (२) दोनों पैरों के दरम्यिान चार उंगली का फ़ासिला रखना और पैरों की उंगलियाँ क़िबले की तरफ़ रखना (३) मुक्तदी की तकबीरे तहरीमा इमाम की तकबीरे तहरीमा के साथ होना (४) तकबीरे तहरीमा के वक्त दोनों हाथ कानों तक उठाना (५) हथेलियों को क़िबले की तरफ़ रखना (६) उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न ज़्यादा खुली हुई और न ज़्यादा बंद रखना (७) सीधे हाथ की हथेली उल्टे हाथ की पुश्त पर रखना (८) छिंगुली और अंगूठे से हल्का बनाकर गटटे को पकड़ना (९) दरम्यिानी तीन उंगलियों को कलाई पर रखना (१०) नाफ़ के नीचे हाथ बांधना (११) सना पढना।

किरअ़त की सात सुन्नतें— (१) अऊज़ु बिल्लाह पढ़ना (२) बिस्मिल्लाह पढ़ना (३)

आहिस्ता से आमीन कहना (४) फज्र और जुहर में सूरे हुजुरात से सूरे बुरूज तक अस्र और ईशा में अवसाते मुफ़स्सल यानी सूरे बुरूज से सूरे 'लमयकुन' तक पढ़ना (५) फज्र की पहली रकअ़त को लम्बी करना (६) न ज़्यादा लम्बी पढ़ना न ज़्यादा ठहर ठहर कर बल्कि दरम्यिानी रफ्तार से पढ़ना (७) फ़र्ज की तीसरी और चौथी रकअ़त में सिर्फ़ सूरे फ़ातिहा पढ़ना।

रुकू की आठ सुन्नतें— (१) रुकू की तकबीर कहना (२) रुकू में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना (३) घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा रखना (४) पिन्डलियों को सीधा रखना (५) कमर को बिछा देना (६) सर और सुरीन को बराबर रखना (७) रुकु में कम—से—कम तीन बार सुब्हा न रब्बियल अज़ीम कहना (८) रुकू में उठने में इमाम को समिअ़ल्ला हुलिमन हमिद: और मुकतदियो को रब्बना लकलहम्द और अकेले को दोनों कहना।

सज्दे की बारह सुन्नतें— (१) सज्दे की तकबीर कहना (२) सज्दे में पहले दोनों घुटनों को रखना (३) फिर दोनों हाथों को रखना (४) फिर नाक रखना (५) फिर पेशानी रखना (६) दोनों हाथों के दरम्यिान सज्दा करना (७) सज्दे में पेट को रानों से अलग रखना (८) पहलुओं को बाज़ुओं से अलग रखना (९) कुहनियों को ज़मीन से अलग रखना (१०) सज्दे में कम—से—कम तीन बार 'सुब्हा न रब्बियल अअ्ला' कहना (११) सज्दे से उठने की तकबीर कहना (१२) सज्दे से उठते हुए पहले पेशानी फिर नाक, फिर हाथ, फिर घुटनों को उठाना और दोनों सज्दों के दरमियान इतमिनान से बैठना।

कअ्दे की तेरह सुन्नतें— (१) सीधे पैर को खड़ा रखना और उल्टे पैर को बिछा कर उस पर बैठना और पैर की उंगलियों को क़िबले की तरफ़ रखना (२) दानों हाथों को रानों पर रखना (३) तशहहुद में 'अल्ला

इ लाह' पर शहादत की उंगली उठाना और 'इलल्लाह' पर झुकाना देना (४) कअद–ए आख़िरा में दरूद शरीफ़ पढ़ना (५) दरूद शरीफ़ के बाद दुआ–ए–मासूरा उन अलफाज़ में जो कुरआन और हदीस के मुशाबह हों पढ़ना (६) दोनों तरफ़ सलाम फेरना (७) इमाम सलाम करने की नीयत करे मुक़तदियों को, फरिशतों को और नेक जिन्नातों को (८) सलाम सीधे तरफ़ पहले फेरना (९) मुक़तदी सलाम करे इमाम को, फ़रिशतों को, नेक जिन्नातों को और दांए बाएं मुक़तदियों को (१०) मुनफ़रिद (वह शख़्स जो अकेले नमाज़ पढ़े) को सिर्फ़ फ़रिश्तों की नीयत करना (११) मुक़तदी को इमाम के साथ सलाम फेरना (१२) दूसरे सलाम की आवाज़ को पहले सलाम की आवाज़ से हल्की करना (१३) मसबूक़ (वह शख्स जिसकी इमाम के साथ से कुछ

रकअत शुरू में छूट गई हो) को इमाम के फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करना।

औरतों की नमाज़ में फ़र्क़

(१) तकबीरे तहरीमा के वक्त अपने हाथ कन्धे तक उठाये लेकिन हाथों को दुपट्टे से बाहर न निकाले (२) सीने पर हाथ और सीधे हाथ की हथेली को उल्टे हाथ पर सिर्फ़ रखे (३) रुकू में इतना झुके कि सिर्फ़ दोनों हाथ घुटनों तक पहुंच जायें और उंगलियों को मिलाकर रखे और दोनों बाजुओं को पहलुओं से मिलाए रखे और दोनों पैरों के टख़नों को बिल कुल मिलाकर रखे (४) सज्दे मे औरतें पाँव न खड़ी करे बल्कि सीधे तरफ़ को निकाल दे और ख़ूब सिमट कर दब कर सज्दा करे के पेट दोनों रानों से और बाहें दोनों पहलुओं से मिली रहें और दोनों बाहों को ज़मीन पर रख दें (५) क़अदे में जब बैठे दोनों पाँव सीधी तरफ़ निकाल ले और दोनों हाथों को रान पर रख ले और उंगलियाँ ख़ूब मिला कर रखे।

मुस्तहिब्बाते नमाज़— (१) तकबीरे तहरिमा के वक़्त आस्तीनों से दोनों हथेलियाँ निकाल लेना (२) रुकू और सुजूद में मुन्फ़रिद (अकेले नमाज़ पढ़ने वाला) का तीन मर्तबा से ज़ायद तस्बीह पढ़ना (३) खड़े होने की हालत में सज्दे की जगह पर और रुकू क़दमों के दरम्यान जल्से और कअ़दे में अपनी गोद पर और सलाम के वक़्त अपने कन्धों पर नज़र रखना, खाँसी को अपनी ताकत भर न आने देना (५) जामई में मुहँ बंद रखना।

नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ें

(१) नमाज़ में बात करना, जान कर हो या भूल कर थोड़ी हो या ज़्यादा (२) किसी को सलाम करना (३) सलाम का जवाब देना या छींकने वाले को *'यर हमुकल्लाह'* कहना या नमाज़ से बाहर वाले किसी शख़्स की दुआ पर आमीन कहना (४) किसी बुरी ख़बर पर *'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊ़न'* पढ़ना या किसी अच्छी ख़बर पर

'अल्हमदुलिल्लाह' कहना या किसी अजीब ख़बर पर 'सुब्हानल्लाह' कहना (५) अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़्मा देना (६) दर्द या रंज की वजह से आह या उफ़ कहना (७) कुरआन शरीफ़ देखकर पढ़ना (८) कुरआन शरीफ पढ़ने में कोई सख़्त ग़लती करना (९) अमले कसीर करना यानी कोई ऐसा काम करना जिस से देखने वाले यह समझें कि यह शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है (१०) दो सफ़ों की मिक़दार के बराबर चलना (११) कोई चीज़ खाना या पीना, जान कर या भूल कर (१२) क़िबले की तरफ़ से बिला उज़्र सीना फेरना (१३) नापाक जगह पर सज्दा करना (१४) सतर खुल जाने की हालत में एक रुक्न की मिक़दार ठहरना (१५) दुआ में ऐसी चीज़ मांगना जो इन्सानों से मांगी जाती है (१६) दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में कोई हर्फ़ ज़ाहिर हो जाये (१७) बालिग़ आदमी का नामज़ में क़ह क़हा मार कर या आवाज़ से हँसना (१८)

इमाम से आगे बढ़ जाना वग़ैरह।

मकरूहाते नमाज़

(१) सदल यानी कपड़े को लटकाना (२) कपड़ों को मिट्टी वग़ैरह से बचाने के लिए हाथ से रोकना या समेटना (३) अपने कपड़ों या बदन से खेलना (४) मामूली कपड़ों में नमाज़ पढ़ना जिनको पहन कर मजमें में जाना पसन्द नहीं किया जाता (५) मुंह में रुपया या पैसा या कोई और ऐसी चीज़ रख कर नमाज़ पढ़ना जिस की वजह से किरअत करने से मजबूर न हों और अगर किरअत से मजबूर हो जायें तो नमाज़ न होगी (६) सुस्ती और बे परवाही की वजह से नंगे सर पढ़ना (७) पाख़ाना पेशाब की हाजत होने की हालत में नमाज़ पढ़ना (८) बालों को सर पे जमा करके जुट्टा बांधना (९) कंकरियों को हटाना लेकिन अगर सज्दा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में कोई मुज़ायका नहीं (१०) उंगलियां चटखाना या एक हाथ की

उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना (११) कमर या कोख या कूल्हे पर हाथ रख़ना (१२) कुत्ते की तरह बैठना (यानी रानें खड़ी करके बैठना ओर रानों को पेट से और घुटनों को सीने से मिला लेना और हाथों को ज़मीन पर रख लेना) (१४) मर्द का सज्दे में दोनों कलाइयों को ज़मीन पर बिछा लेना (१५) ऐसे आदमी की तरफ़ नमाज़ पढ़ना जो नमाज़ी की तरफ़ मुंह करके बैठा हो (१६) हाथ के इशारे से सलाम का जवाब देना (१७) बिला उज़्र चहारज़ानों (आल्ती–पाल्ती मार कर) बैठना (१८) बिला वजह जमाई लेना या रोक सकने के बावजूद न रोकना (१९) आँखों को बन्द करना लेकिन अगर नमाज़ में दिल लगाने की वजह से बन्द करें तो मकरूह नहीं (२०) इमाम का मेहराब के अन्दर खड़ा होना लेकिन अगर मेहराब के अन्दर नहीं तो मकरूह नहीं (२१) अकेले इमाम का एक हाथ ऊंची जगह पर खड़ा होना और अगर उसके साथ कुछ मुक़्तदी भी हों

तो मकरूह नहीं (२२) ऐसी सफ़ के पीछे अकेले खड़ा होना जिसमें जगह ख़ाली हो (२३) किसी जानदार की तस्वीर वाले कपड़े को पहन कर नमाज़ पढ़ना (२४) ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना कि नमाज़ी के सिर के ऊपर या उसके सामने या सीधे उल्टी जानिब या सज्दे की जगह तस्वीर हो (२५) चादर या और कोई कपड़ा उस इस तरह लपेट कर नमाज़ पढ़ना कि जल्दी हाथ बाहर न निकल सके (२७) नमाज़ में अंगड़ाई लेना यानी सुस्ती उतारना (२८) सुन्नत के ख़िलाफ़ नमाज़ में कोई काम करना।

नमाज़े जनाज़ा मे दो चीज़ें फ़र्ज़ हैं

(१) चार तकबीर यानी चार मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' कहना (२) क़याम यानी खड़े होकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना।

नमाज़े जनाज़ा में चार चीज़ें सुन्नत हैं

(१) इमाम का मैयत के सीने के सामने

खड़ा होना (२) पहली तकबीर के बाद सना पढ़ना (३) दूसरी तकबीर के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ना (४) तीसरी तक़बीर के बाद मैयत के लिए दुआ पढ़ना।

नमाज़े जनाज़ा के लिए नीयत करना

नीयत करता हूँ नमाज़े जनाज़ा की चार तकबीरों के साथ, तारिफ़ अल्लाह तआ़ला के लिए, दरूद शरीफ़ हज़रत रसूलुल्लाह (स०) के लिए, दुआ इस मैयत के लिए इस इमाम के पीछे (मैं इमाम मुक़्तदियों को) मुह मेरा क़िब्ले की तरफ़।

पहली तकबीर— अल्लाहु अकबर०

सना— सुब्हा—न क अल्लाहुम्म—म व बिहम्दि— क व तबा—र कस्मु—क व—तआ़ला जद्दु—क व—जल्ला सनाउक वला इला—ह ग़ैरुक०

दूसरी तकबीर— अल्लाहु अकबर०

दरूद शरीफ— *अल्ला हुम्म—म सल्ले अ़ला मुहम्मदिंव व—अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै—त व—सल्लम त बारक—त व—रहिम—त व—त—रह् हम—त अला इबराही—म व—अ़ला आलि इब्राही—म इन—न—क हमीदुम्मजीद०*

तीसरी तकबीर— अल्लाहु अकबर०

बालिग़ मर्द और औरत की मैयत की दुआ

अल्लाहुम्मग़फिरलि हय्यिना वमैयतिना वशाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व—कबीरिना व—ज़ करिना व उन्साना अल्लाहुम्म—मन अह् यइ—तहू मिन्ना फ़—अहयिही अलल इस्लाम व—मन तवफ़्फ़हू अलल ईमान०

नाबालिग़ लड़के की मैयत की दुआ

अल्ला हुम्मज अ़ल्हु लना फ़ र तै वज अ़ल्हु लना अजरौं ज़ुख़रौं वज अल्हु लना शफ़ि अ़ौंवमुशफ़्फ़अ़०

नाबालिग़ लड़की की मैयत की दुआ़

अल्ला हुम्मज अल्हा लना फ–र–तौं वज अल्हा लना अजरौं वजुख़रौं वज अल्हा लना अज रंव्वजुख़ रंव वज अल्हा लैना शफ़िअतौं व–मुशफ़्फ़अ:०

चौथी तकबीर– अल्लाहु अकबर०

दाएं और बाएं कहे–

अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह०

मुसाफ़िर नमाज़ कैसे पढ़े– क़स्र और दीगर अहकामे सफ़र जारी होने के लिए 48 मील 77¼ किलोमीटर हो तो क़स्र जायज़ है। क़स्र का मतलब यह है कि चार रकअ़त वाली नमाज़ को दो रकअ़त पढ़ना।

खाने के आदाब– (१) दस्तरख़्वान बिछाना (२) दोनों हाथ गट्टों तक धोना (३) 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना (४) सीधे हाथ से खाना (५) खाना एक क़िस्म का हो तो अपने सामने से खाना (६) अगर कोई लुक़्मा गिर

जाए तो उठाकर साफ़ करके खाना (७) टेक लगाकर न खाना (८) खाने में कोई ऐब न निकालना (९) खाते वक़्त उकडू बैठना या एक घुटना खड़ा हो और दूसरे घुटने को बिछाकर उस मर बैठना या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछा कर कअ्दे की तरह बैठे और आगे कि तरफ़ ज़रा झुक कर बैठे (१०) खाने के बाद बर्तन और उंगलियों को साफ़ कर लेना (११) तीन उंगलियों से खाना (१२) मसिज्द में बैठ कर प्याज़ न खायें और अगर बाहर भी खाए तो बदबू जाने तक मसिज्द में दाख़िल न हों (१३) अगर शुरू में 'बिस्मिल्लाह' पढ़नी भूल जाए तो 'बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू०' पढ़ना (१४) खाने के बाद की दुआ पढ़ना *'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत अ मना व सक़ाना वज अ़लना मिनल मुस्लिमीन०'*

दूसरी दुआ— *अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी हुव अश बअ़ना व अरवाना व अनअ़म अ़लैना व अफ़ज़ल* (१५) जब किसी दूसरे के घर

खाना खाएं तो यह दुआ पढ़े *'अल्लाहुम्म म अत अम मन अत अमनी वसकि मन सक़ानी॰'* (१६) दस्तरख़्वान उठाने की *'अल्हम्दु लिल्लाहि हमदन कसीरन कसीरन तैयबन मुबारकन फ़ीहि॰'* पढ़ना (१७) जब मेज़बान के घर से चलें तो यह दुआ पढे *'अल्लाहुम्म बारिक लहुम र ज़क़ तहुम वग़ाफ़िर ल़हुम वरह़म हुम॰'*

पीने के आदाब— (१) सीधे हाथ से पीना (२) बैठ कर पीना (३) *'बिस्मिल्लाह'* कह कर पीना और पी कर *'अल्हम्दुलिल्लाह'* कहना (४) तीन सांस में पीना (५) बर्तन के टूटे हुए किनारे की तरफ़ से न पीना (६) दूध पीने के बाद यह दुआ पढ़ना *'अल्ला-हुम्म म बारिक लना फीहि वज़िदना मिन्हु'* (७) ज़म-ज़म का पानी खड़े हो कर पीना (८) वुज़ू से बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना।

सोने के आदाब— (१) इशा की नमाज़ पढ़ कर जल्दी सोने की कोशिश करना (२) बावुज़ू सोना (३) तीन मर्तबा बिस्तर झाड़

लेंगे (४) सुरमा लगाकर सोना (५) सोने से पहले तस्बीह फ़ातिमा पढ़ लेना '३३ मर्तबा सुब्हानल्लाह, ३३ मर्तबा अल्हम्दु–लिल्लाह और ३४ मर्तबा अल्लाहु अकबर' पढ़ना (६)'अल्हम्दु शरीफ़' पढ़ना, चारों कुल पढ़ना, आयतुल कुर्सी पढ़ना, सूरे मुल्क और अलिफ़–लाम–मीम–सज्दा पढ़ना अगर ज़्यादा न पढ़ सके तो कम से कम कुरआन शरीफ़ की दस आयतें ही पढ़ ले (७) सोने से पहले तीन बार *'इस्तिग़फ़ार'* भी पढ़ना *'असतग़फ़िरुल्लाहल्लज़ी ला इला–ह इल्ला हुवल हैयुल क़ैयूम॰'* (८) सोने की दुआ पढ़ना *'अल्लाहुम्म म बिस्मिक अमूतु व अहया॰'* (९) सीधी करवट लेट कर सीधा हाथ गाल के नीचे रखकर क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके सोना (१०) अगर डरावना ख़्वाब नज़र आए और आँख खुल जाए तो *'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर–रजीम॰'* तीन बार पढ़कर उल्टी तरफ़ थूथकार दो और करवट बदल कर सो जाओ (११) सोकर उठे तो यह दुआ पढ़े 'अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी

अह्याना बअ्-द मा अमा तना व इलै हिन्नुशूर० '

फ़ज़ाइले कुरआन मजीद- (१) क़्यामत के दिन पढ़ने वाले की सिफ़ारिश करेगा' (२) हर हर्फ़ पर दस नेकियाँ मिलेंगी (३) साहिबे कुरआन से कहा जाएगा कि कुरआन मजीद पढ़ते जाओ और जन्नत में बलन्द दरजात की तरफ़ बढ़ते जाओ क्योंकि उसकी मंज़िल वहाँ तक है जहाँ तक वह आख़िरी आयत की तिलावत करेगा (४) दिल का ज़ंग दूर करेगा (५) कुरआन शरीफ़ पढ़ने से अल्लाह की मुहब्बत में ज़्यादती होती है (६) अल्लाह से नज़दीकी पैदा होती है।

आदाबे तिलावते कुरआन पाक

(१) पाक साफ़ होना (२) बावुज़ू होना (३) अदब के साथ बैठना (४) कुरआन शरीफ़ को रेहल या साफ़ तकिए पर रखना (५) उसकी त्तरफ पांव न करना (६) उससे ऊँची जगह न बैठना (७) तअव्वुज़ और तस्मियः

से शुरू करना। (८) कुरआन मजीद पढ़ने के दरम्यान बातें न करना (९) अगर बातें करें तो फिर से तअव्वुज़ पढ़ कर शुरू करना (१०) क़वाइद के मुताबिक ठहर-ठहर कर पढ़ना और अच्छी आवाज़ से पढ़ना।

सीरत हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हुज़ूरे पाक (स०) नौ रबीउल अव्वल बरोज़ पीर मुताबिक बीस अप्रैल ५७१ ई० को मक्का मुअज़्ज़मा में पैदा हुए। आप (स०) के वालिद का नाम अब्दुल्लाह, वाल्दा का नाम आमिना था। दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब, दादी का नाम फ़ातिमा, नाना का नाम वहब, नानी का बर्रह था। आप के बारह चचा और छः फूफियां थीं। आप के वालिद आप की पैदाइश से दो महीने पहले वफ़ात पा चुके थे। आप की छः साल की उम्र हुई तो वाल्दा का भी इन्तक़ाल हो गया और फिर परवरिश दादा अब्दुल मुत्तलिब के

सुपुर्द हुई। जब उम्र बारह साल की हुई तो आप के चचा अपने साथ तिजारत के लिए मुल्के शाम की तरफ ले गऐ, रास्ते में बुहैरा राहिब ने पहचान कर यह नबी आख़िरुज़्ज़मां है, वापस करा दिया। पच्चीस साल की उम्र हुई तो हज़रत ख़दीजा की तरफ़ से उनकी तिजारत के वकील होकर फिर शाम तशरीफ ले गऐ। वहाँ फिर नस्तूरा राहिब से मुलाक़ात हुई उसने आपके नबी होने की बशारत दी। इक्तालिसवीं बरस नौ रबीउ़ल अव्वल मुताबिक़ बारह फरवरी ६१० इ० बरोज़ पीर को कोहे हिरा में आप को नुबुव्वत मिली और आपने खुदा के हुक्म पर पोशीदा तौर पर मुसलमान बनाना शुरू किया। जो हज़रात मुसलमान होते रहे उन्होंने अपना फ़र्ज़ महसूस किया और फ़ौरन दूसरों में तबलीग़ शुरू कर दी। तीन साल के अर्से में तक़रीबन तीस आदमी मुसलमान हुए। उसके बाद आप ने खुल्लम खुल्ला तबलीग़ शुरू कर दी। जिसकी बिना पर मुश्रिकों ने मुसलमानों पर ज़ुल्म शुरू कर दिया। परेशानियों

के बढ़ने की वजह से पन्द्रह मुसलमानों ने सन् ५ नब्वी को मक्का छोड़ कर हब्शा में क़्याम फ़रमाया (यह पहली हिजरते हब्शा कहलाती है।) ७ नब्वी में ग़ैरमुस्लिमों ने मुसलमानों को बिल्कुल ख़त्म करने के इरादे से आप (स०) को और आप के हिमायतियों (साथियों) को शिअ्बे अबी तालिब में डाल कर गोया क़ैद कर दिया जहाँ तीन साल तक रहे। इसी दौरान ७ नब्वी को सौ से कुछ ज़्यादा मुसलमानों ने हब्शा की दूसरी हिजरत की और सन् १० नब्वी को हज़रत ज़ैद इब्ने हारिस के साथ ताइफ़ का सफर किया और मेअ्राज का वाक़िआ भी पेश आया जिसमें पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं। और इसी दस नब्वी को मदीना के दो अफ़राद मअ्द (रज़ि०) और ज़क्वान (रजि०) मुसलमान हुए। ११ नब्वी में मदीने के छः अफ़राद, १२ नब्वी में चौदह अफ़राद मुसलमान हुए। इसी को बैते उक़्बा—ए—ऊला कहते हैं। और फिर तेरह नब्वी में तेहत्तर आदमियों ने बैत की जिस को बैते उक़्बा—ए—सानिया

कहते हैं। जब आप (स०) को इस बात का पूरा अंदाज़ा हो गया कि मक्के में रहते हुए इस्लाम में कामयाबी मुशिकल है तो आप (स०) अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ शुरू रबीउ़ल अव्वल १४ नब्वी में मक्का छोड़ कर मदीना के लिए रवाना हो गये। मक्के से कुछ आगे चलकर सौर पहाड़ की एक ग़ार में तीन दिन क़याम फ़रमाया। चार रबीउ़ल अव्वल पीर के दिन यहाँ से रावाना होकर कुबा पहुंचे। यहाँ आपने चौदह दिनं क़याम फ़रमाया और एक पहली मसिज्द तामीर की। सत्ताईस रबीउ़ल अव्वल को जुमे कि दिन मदीने में हज़रत अबु अय्यूब अन्सारी (रजि०) के मकान पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए (इसी साल से हिजरत का पहला साल शुरू होता है।)

सन् १ हिजरी में मसिज्दे नब्वी की बुनियाद रखी गई और अज़ान की इब्तदा हुई।

सन् २ हिजरी में रोज़े फर्ज़ हुए, ज़कात फर्ज़ हुई, सदक़ा–ए–फ़ित्र वाजिब हुआ। ईद

बक़रईद की नमाज़ का हुक्म हुआ। और सतरह रमज़ान को जंगे बदर हुई जिसमें तीन सौ तेरह मुसलमान थे जिनके पास कुल दो घोड़े सत्तर ऊँट और चंद तलवारें थीं और काफ़िर तक़रीबन एक हज़ार थे। उनके पास सौ ऊँट, सौ घोड़े और हर एक के पास हथियार थे। इसके बावजूद अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को बहुत बड़ी फ़तह दी। इस जंग में चौदह मुसलमान शहीद हुए और सत्तर काफ़िर क़त्ल हुए और सत्तर ही क़ैद हुए।

सन् ३ हिजरी में शराब हराम हुई। जंगे उहद हुई जिसके अंदर शुरू में एक ग़लती की वजह से शिकस्त हुई उसके फ़ौरन बाद फ़तह हो गई।

सन् ४ हिजरी में बीरे मऊना का वाक़आ़ पेश आया जिस में सत्तर हुफ़्फ़ाज़े कुरआन शहीद हुए।

सन् ५ हिजरी में पर्दे का हुक्म हुआ। जंगे ख़न्दक़ हुई और बनी मुस्तलक़ का वाक़आ़ हुआ।

सन् ६ हिजरी में चौदह सौ सहाबा–ए किराम के साथ सुलह हुदैबिया का वाक़्आ हुआ। दुनिया के बादशाहों के पास इस्लाम की दावत के ख़ुतूत भेजे।

सन् ७ हिजरी में ग़ज़्व–ए–ख़ैबर हुआ। उमरा भी अदा किया गया जो हुदैबिया के मौक़े पर तय हुआ था।

सन् ८ हिजरी में जमादियुल अव्वल में जंगे मौता हुई। रमज़ानुल मुबारक में मक्का फ़तह हुआ। जिसमें दस हज़ार मुसलमान थें। आप (स०) मक्का में १५ रोज़ क़याम फ़रमाकर वापस तशरीफ़ ले आए और फ़ौरन बाद शव्वाल ही को जंगे हुनैन हुई जिसमें चार मुसलमान शहीद हुए और ७१ काफ़िर क़त्ल हुए। उसके फ़ौरन बाद जंगे ताइफ़ का वाक़्आ पेश आया।

सन् ९ हिजरी में माहे रज्जब में तबूक के लिए रवाना हुए। १५ रोज़ वहाँ क़याम फ़रमाया और रमज़ान में मदीना मुनव्वरह वापस पहुँचे।

सन् १० हिजरी में पच्चीस ज़ीकादा हफ़्ते के दिन हज के लिए मदीने से रवाना हुए और चार ज़िलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा पहुंचे और तक़रीबन सवा लाख सहाबा—ए किराम के साथ हज अदा किया।

सन् ११ हिजरी में २८ सफ़र मंगल के दिन आप (स०) के सर में दर्द हुआ फिर बुख़ार हुआ। चौदह रोज़ आप (स०) बीमार रहे और बारह रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर चाश्त के वक्त तिरेसठ साल की उम्र पूरी कर आप (स०) अल्लाह से जा मिले और दो दिन के बाद बुध की रात को मदीने ही में दफ़न किये गये।

खुलफ़ा—ए—राशिदीन

हज़रत मुहम्मद (स०) की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दिक़ (रज़ि०) मुसलमानों के खलीफ़ा बने। आप (रज़ि०) सवा दो

साल ख़लीफ़ा रहे और तिरेसठ साल की उम्र पूरी फ़रमाकर बाईस जमादियुस्सानि सन् १३ हिजरी में वफ़ात पाई।

इनके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ख़लीफ़ा बने आप (रज़ि०) साढ़े दस साल ख़लीफ़ा रहे और ६३ साल की उम्र पूरी फ़रमा कर सत्ताईस ज़िल हिज्जा सन् २३ हिज़री मुताबिक सन् ६४४ ई० में वफ़ात पाई।

इनके बाद हजरत उस्मान ग़नी (रज़ि०) ख़लीफ़ा बने आप बारह साल ख़लीफ़ा रहे और बयासी साल की उम्र पूरी फ़रमा कर १८ ज़िल हिज्जा ३५ हिजरी में वफ़ात पाई।

इनके बाद हज़रत अली (रज़ि०) ख़लीफ़ा बने। आप पौने पाँच साल ख़लीफ़ा रहे और तिरेसठ साल की उम्र पूरी फ़रमा कर १७ रमज़ान सन ४० हिजरी में वफ़ात पाई।